यीशु के सामने मूसा और एलियाह के प्रकट होने का संदेश

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह का नाम धन्य हो।

स्वागत है आपका, जब हम परमेश्वर के वचन की अनन्त सत्यताओं पर विचार करते हैं।

जब यीशु पर्वत पर प्रार्थना कर रहे थे और उनके साथ उनके तीन चेलों — पतरस, यूहन्ना और याकूब — थे, तब मूसा और एलियाह उनके सामने प्रकट हुए। इस घटना से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न हैं:

1. कैसे मूसा, जो सदियों पहले मर चुके थे और जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं दफनाया था (पुनरुत्थान 34:5-6) — यीशु से मिलने आए?
2. मूसा और एलियाह उनके सामने क्यों प्रकट हुए? उनके प्रकट होने का क्या महत्व था?

इन प्रश्नों का उत्तर शास्त्र में मिलता है:

लूका 9:28–31

“इन बातों के आठ दिन बाद, वह पतरस, यूहन्ना और याकूब को लेकर पर्वत पर प्रार्थना करने गया। जब वह प्रार्थना कर रहा था, उसका मुख उज्ज्वल हुआ, और उसके वस्त्र चमकीले सफेद हो गए। और देखो, दो पुरुष उसके साथ बात कर रहे थे, मूसा और एलियाह, जो महिमा में प्रकट हुए और उसकी प्रस्थान की बात कर रहे थे,

जिसे वह यरुशलेम में पूरा करने वाला था।”

मुख्य वाक्य छंद 31 है:

“जो महिमा में प्रकट हुए और उसके प्रस्थान के बारे में
बातें कर रहे थे, जिसे वह यरुशलेम में पूरा करने वाला था।”

इस प्रकार, मूसा और एलियाह का प्रकट होना यीशु के निकट मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण की योजना को प्रकट करने के लिए था — उद्धार की अंतिम पूर्ति।

मूसा की भूमिका को समझना

मूसा सदियों पहले मर चुके थे और परमेश्वर द्वारा दफनाए गए थे (पुनरुत्थान 34:5-6), फिर भी परमेश्वर ने उन्हें महिमा में प्रकट होने की अनुमति दी, ताकि वे भविष्यवाणी के रूप में यीशु की मृत्यु के बारे में गवाही दे सकें।

मसीह के बलिदान से पहले, धर्मी आत्माएँ मृत्युलोक में उद्धार की प्रतीक्षा कर रही थीं (लूका 16:19–31; 1 पतरस 3:18–20)।

परमेश्वर उन्हें अस्थायी रूप से प्रकट कर सकता था ताकि वे भविष्यवाणी संदेश दें। उदाहरण के लिए, शाऊल के भविष्यवाणी संदेश के लिए एंडोर के माध्यम से सामुएल प्रकट हुए (1 सामुएल 28:7–19)।

इसी तरह, मूसा का प्रकट होना यीशु की मृत्यु के लिए भविष्यवाणी गवाही का प्रतीक था। यह दर्शाता है कि परमेश्वर की योजना जीवन और मृत्यु से परे है: वह अपने उद्देश्य को उन लोगों के माध्यम से भी पूरा करता है जो पहले गुजर चुके हैं।

मसीह के पुनरुत्थान के बाद, कोई मृतकों को बुला नहीं सकता, क्योंकि यीशु ने मृत्यु और हाडेस की चाबियाँ ले ली हैं (प्रकाशितवाक्य 1:18)।

एलियाह की भूमिका को समझना

एलियाह कभी नहीं मरे, बल्कि चक्रवात में उठाए गए और स्वर्ग में ले जाए गए (2 राजा 2:11)। उन्होंने स्वर्गीय वास्तविकताओं को पूरी तरह समझा और परमेश्वर द्वारा भेजे गए ताकि वे भविष्यवाणी के रूप में यीशु के स्वर्गारोहण और स्वर्गीय अधिकार के बारे में गवाही दें।

एलियाह की उपस्थिति यह दर्शाती है कि मसीह का मिशन केवल मृत्यु (मूसा) तक सीमित नहीं था, बल्कि स्वर्गारोहण (एलियाह) तक भी विस्तारित था। उनका प्रकट होना यीशु के भविष्य के महिमा प्राप्त करने की पुष्टि करता है।

धार्मिक महत्व

मूसा और एलियाह परमेश्वर की उद्धार योजना के स्वर्गीय गवाह के रूप में कार्य कर रहे थे:

मूसा – यीशु की मृत्यु और परमेश्वर की वाचा की पूर्ति का प्रतिनिधित्व करता है (रोमियों 5:8–10)।
एलियाह – यीशु के स्वर्गारोहण और स्वर्गीय अधिकार में उठाए जाने का प्रतिनिधित्व करता है (फिलिप्पियों 2:9–11)।

यह घटना यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और अंततः लौटने का पूर्वाभास थी। उनके मुख की चमक उनके पुनरुत्थान की महिमा और लौटने पर उनके अधिकार का प्रतीक है (मत्ती 17:2)।

अनुप्रयोग: क्या आप तैयार हैं?

जैसे उनकी मृत्यु और स्वर्गारोहण की भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं, वैसे ही उनका पुनरागमन भी होगा (प्रेरितों के काम 1:9–11; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16–17)।

संकेत स्पष्ट हैं और समय निकट है। मसीह अपने धर्मियों को इकट्ठा करने आएंगे, और जो पीछे रहेंगे वे न्याय और कष्ट का सामना करेंगे (मत्ती 24:29–31)।

क्या आपने अपने हृदय को तैयार किया है?

क्या आपने यीशु पर विश्वास किया और अपने पापों से पश्चाताप किया (प्रेरितों के काम 3:19)?
क्या आपने उनके आज्ञा अनुसार बपतिस्मा लिया (मत्ती 28:19–20) ?
क्या आपको पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ (प्रेरितों के काम 1:5; 2:38) ?

देरी न करें। आज ही यीशु को स्वीकार करें, बपतिस्मा लें, और पवित्र आत्मा से भर जाएँ। उनका आने वाला दिन निकट है।

प्रभु आप पर आशीर्वाद दें। मारानाथा!

कृपया इस संदेश को दूसरों के साथ साझा करें ताकि वे भी प्रोत्साहित हों।

Share on:
WhatsApp

Print this post